

* * *

सुकविता प्रिय हो रस लीजिये ।

विषय का अनुशीलन कीजिये ॥

विविध भाव अलकृति लेखिये ।

कवि विलास सुधीजन देखिये ॥

* * *

—जगन्नारायणदेव शर्मा,

कविपुष्कर